Shikshan Sanshodhan : Journal of Arts, Humanities and Social Sciences ISSN: 2581-6241 Volume - 3, Issue - 2, Mar-Apr – 2020
Bi-Monthly, Peer-Reviewed, Refereed, Indexed Journal Impact Factor: 3.589
Received on : 05/04/2020 Accepted on : 19/04/2020 Publication Date: 30/04/2020

आर्थिक विकास पर जनसंख्या के तेजी से विकास के हानिकारक प्रभाव (सीकर जिले के विशेष सन्दर्भ में)

डॉ. विनोद कुमार सैनी
मु.–बडी ढाणी (सीमारला रोड़), पोस्ट–थोई,
जिला–सीकर, (राजस्थान) 332719 भारत
ई. मेल. vinod.saini42@gmail.com

शोध सारांश : आर्थिक विकास पर जनसंख्या के तेजी से विकास के हानिकारक प्रभाव के बारे में ज्यादातर चिंता इस बात पर आधारित है कि या तो प्रजनन संबंधी निर्णय बहिर्जात हैं या अंतर्जात, व्यापक और महत्वपूर्ण बाहरी चीजें उन्हें विकृत करती हैं।यह तर्क दिया जाता है कि यह दृष्टिकोण गलत है और कथित तौर पर कई घातक परिणाम तेजी से जनसंख्या वृद्धि की तुलना में अनुचित नीतियों और संस्थानों से अधिक हैं।

जनसंख्या वृद्धि और वैश्विक सुरक्षा के के लिए इसके निहितार्थः 2015 से 2050 के बीच विश्व की आबादी लगभग 2.5 बिलियन बढ़ने का अनुमान है, जो 7.3 बिलियन से बढ़कर 9.8 हो गई है। अनुमानित वृद्धि का विशाल बहुमत–विकासशील देशों में जनसंख्या वृद्धि एक चुनौती है। हाल के दशकों में, विश्व में भूख और गरीबी की घटनाओं को कम करनें उल्लेखनीय लाभ हुआ है, लेकिन उच्च प्रजनन दर वाले देशों में प्रगति धीमी रही है। सबसे तेजी से बढ़ती जनसंख्या वाले देश भूख, गरीबी, पर्यावरणीय गिरावट और नाजुकता के वैश्विक सूचकांको पर उच्च रैंक करते हैं। और इनमें से कई देश जलवायु परिवर्तन, क्षेत्रीय या जातीय संघर्ष, या पानी की कमी के रूप में आर्थिक विकास में भरी बाधाओं का सामना करते है। इनमें से अधिकांश देशों में 15 से 25 वर्ष की आयु के बीच बड़ी संख्या में बेरोजगार युवा हैं। एक जनसांख्यिकीय कारक जो रातनीतिक अस्थिरता और संघर्ष में योगदान दे सकता हैं। जब तक इन देशों में प्रजनन दर तेजी से गिरावट नहीं आती है, तब तक जनसांख्यिकीय के अनुमान के अनुसार, इन देशों में से कई अनिश्चित भविष्य का सामना करते है।

संकेतक शब्दः आर्थिक विकास, नगरीयकरण, हानिकारक, परिवार नियोजन कार्यक्रम, शिक्षा का प्रसार।

१ प्रस्तावना :

जनसंख्या के वितरण एवं घनत्व का अध्ययन किसी क्षेत्र के जनसंख्या अध्ययन के प्रारम्भिक चरण है। जनसंख्या के परिवर्तनषील स्वरुप को समझने के लिए जनसंख्या वृद्धि का अध्ययन आवश्यक है। किसी क्षेत्र विषेष में निवासियों के संख्या में निशिचित समय में हुए परिवर्तन को जनसंख्या वृद्धि कहते हैं।किसी क्षेत्र की जनसंख्या वृद्धि उस क्षेत्र की आर्थिक प्रगति सामाजिक मान्यताओं सांस्कतिक पृष्ठभूमि आदि का प्रतिबिम्ब होती है। जनसंख्या वृद्वि किसी क्षेत्र की जनसांखयिकीय गतिशिलता का केन्द्र है। यह जनसंख्या का वह तत्व है जिससे जनसंख्या के अन्य सभी तत्व गहन रुप से संबंध है और इसी तत्व से ही अन्य लक्षणों का अर्थ और महत्व है।

इसलिए किसी क्षेत्र की जनसंख्या वृद्धि का समझना उस क्षेत्र की सम्पूर्ण जनसंख्या संरचना को समझने की कुंजी है।जनसंख्या वृद्धि का अर्थ अधिकतर एक क्षेत्र विषेष में किसी समय रह रहे लोगो की संख्या में परिवर्तन से है। यह परिवर्तन नकारात्मक भी हो सकता है और सकारात्मक भी। यदि किसी निष्चित अवधि में निर्षिचित क्षेत्र के निवासियों की संख्या में वृद्धि होती है तो इसे धनात्मक वृद्धि कहते है। इसके विपरित जब निवासियों की संख्या में कमि आति है, तो इसे ऋणात्मक वृद्धि कहतें है। इस समय विश्व के अधिकांश भागों में विशेषतया विकाशील देशों में जनसंख्या में धनात्मक वृद्धि हो रही है। जनसंख्या की वृद्धि को निरपेक्ष आंकडो अथवा प्रतिषत मात्रा में व्यक्त किया जाता है। जनसंख्या की वृद्धि की गणना प्राय दस वर्षो की अवधि के लिए की जाती है। यह अवधि दो जनगणनाओं के बीच की अवधि है। इस तरह वास्तविक जनसंख्या की सहायता से निकाली जनसंख्या वृद्धि–दर को जनसंख्या वृद्धि की वास्तविक दर कहते है।

जनसंख्या के अध्ययनों में प्रायः प्राकृतिक वृद्धि का प्रयोग किया जाता है। जनसंख्या की प्राकृतिक वृद्धि दर को निकालने के लिए कुल जन्म और कुल मृत्यु के अन्तर को समय के प्रारम्भ की जनसंख्या से विभाजित करके सो से गुणा कर देते है। परन्तु वास्तविक वृद्धि प्राकृतिक वृद्धि से भिन्न होती है। वास्तविक वृद्धि की गणना करते समय जनसंख्या के स्थान परिवर्तन कारक को भी ध्यान में रखा जाता है परन्तु प्राकृतिक वृद्धि–दर में केवल जन्म–दर व मृत्यु–दर को ध्यान में रखा जाता है। जनसंख्या अध्ययन व विश्लेषण के लिए दोना प्रकार के वृद्धि–दरों का प्रयोग किया जाता है। फिर भी; किसी क्षेत्र की जनसंख्या वृद्धि का अध्ययन करने के लिए तुलनात्मक आंकडों का ध्यान पूर्वक प्रयोग आवश्यक है। साधारणतया जनसंख्या वृद्धि–दर निकालते समय गलती होने की संभावना रहती है क्यों की जिस क्षेत्र का अध्ययन कर रहे हैं, उसकी प्रशासनिक इकाईयों में क्षेत्रीय परिवर्तन हो सकता है। कई बार प्रशासनिक सुधार हेतु जिन प्रशासनिक इकाईयों के आधार पर आकडे संग्रहित किये जाते हैं उनकी सीमाओं में परिवर्तन कर दिये जातें हैं ताकि प्रशासन में

सुविधा रहे। चुँकि आंकडों का संग्रह इन प्रशासनिक इकाईयों द्वारा किया जाता है। इसीलिए उन इकाईयों के लिए जनसंख्या वृद्धि निकालना कठिन हो जाता है जिन इकाईयों के क्षेत्रिय विस्तार में परिवर्तन किया गया हो।

जनसंख्या शब्द से आशय किसी क्षेत्र विशेष जैसे नगर राज्य देश या महाद्वीप में किसी समय विशेष में निवास करने वाले व्यक्तियों की संख्या से है। एक विषय के रुप में जनसंख्या के अध्ययन के अध्ययन को जनांकिकी कहते हैं। मानव की संख्या वितरण घनत्व संरचनात्मक गुण मानव संख्या में परिवर्तन के कारण एवं प्रभाव आदि किसी क्षेत्र के भौगोलिक अध्ययन का अनिवार्य है।

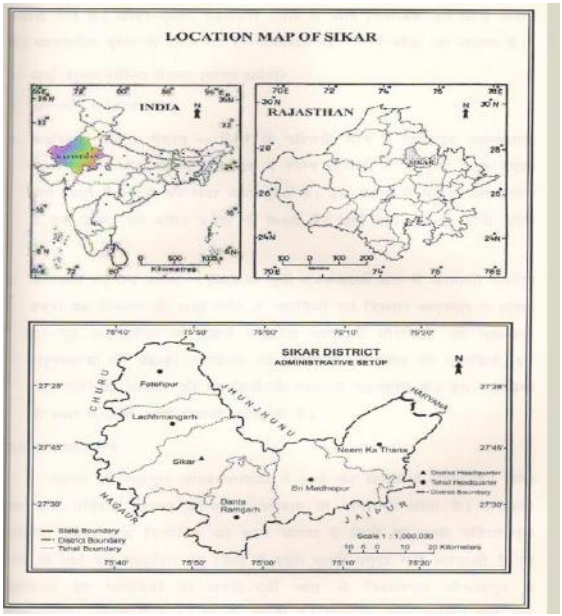

किसी भी क्षेत्र का आर्थिक विकास उस क्षेत्र के मानव संसाधन पर आश्रित होता है। मानव ही प्राकृतिक संसाधनो का उपयोग करता है। इसलिए मानव भी एक संसाधन है। इसलिए किसी भी क्षेत्र के मानव संसाधन का अध्ययन तथा उनका विश्लेंषण करना सबसे अधिक महत्वपूर्ण हो जाता है। वर्ष 2011 कि जनगणना के अनुसार सीकर जिले की कुल जनसंख्या 2677737 है। यहॉ की कुल जनसंख्या में सें 1377120 पुरूष तथा 1300617 महिलाएं है। जनसंख्या की दृष्टि से राज्य मे सीकर जिले का 6वां स्थान है।

२ साहित्य समीक्षा :

जनसंख्या भूगोल में किये गये शोध विषयक अध्ययनों के विवेचन से यह स्पष्ट हो जाता है कि जनसंख्या वृद्धि एवं नगरीयकरण पर अनेक विद्वानों ने शोध एवं अनुसंधान कार्य किया है। अब तक जनसंख्या भूगोल में जनसंख्या वृद्धि व नगरीकरण शीर्षक पर अनेक साहित्य पढ़ने को मिले है। जिनमें एच.एल. सिंह और बबीता सिंह (2009) आर.पी. चान्दना, बाला 1986 दुबे 1990, मुखर्जी ए.बी. (1988) (शर्मा 1991) सिंह यू. 1960 लाल परमानन्द (1962 टिस्डेल (1942) है गेट (1975) आदि विद्वानों के कार्य प्रशंसनीय है। गोसल और चान्दना ने 1969–72 के मध्य किए गए शोधों का लेखा जोखा प्रस्तुत करते हुए हाल के जनगणना आकार पर सम्पूर्ण भारत के जनसंख्या वितरण का अध्ययन करने पर बल दिया।

भारत में जनसंख्या भूगोल का ढॉचा सर्वप्रथम गोसल (1956) ने अपने डॉक्टरेट थीसिस में दिया जिसे उनहोने ट्रिवार्था के मार्गदर्शन में पूर्ण किया था। गोसल ने पंजाब विश्वविद्यालय में अपने मार्ग दर्शन में भारत में जनसंख्या भूगोल की नींव रखी और बींसवी सदी के छठे दशक के प्रारम्भिक वर्षों में अपने मार्गदर्शन में शीघ्र कार्य करवाया (कृष्ण 1968 चान्दना 1970, मेहता 1971) सिंह, एच,एल, और सिंह बबीता (2009) ने प्रतापगढ जिला में जनसंख्या वृद्वि प्रारूप का अध्ययन किया है इन्होनें उपयुक्त आंकडों का विश्लेषण कर जनसंख्या वृद्वि को दर्शाया है तथा जनसंख्या से उत्पन्न समस्याओं के बारे में अध्ययन किया है।

प्रों. पूरण मल ने (2010) नीमकाथाना तहसील में बढती जनसंख्या एवं पेयजल समस्याऐ चुनौतियो एवं निवारण पर शोध पत्र प्रस्तुत किया हैं इसमें इन्होने वर्षा की कमी तथा बढती जनसंख्या के विशेष संदर्भ में व वर्तमान पेयजल समस्याओं और उनके समाधान हेतु चलाई जा रही विभिन्न सरकारी योजनाओं की तुलनात्मक अध्ययन किया है हाल ही में क्षेत्रीय सर्वेक्षण पर आधारित लघुस्तरीय अध्ययनों की प्रकृती की शुरूआत हुई है।

३ अध्ययन के उद्देश्य : प्रस्तुत लधु शोध में सीकर जिले में जनसंख्या वृद्धि एवं नगरीयकरण के स्थानिक प्रतिरूप को ज्ञात करना है। जिसके अध्ययन के माध्यम से योजनाकार ,सामाजिक कार्यकर्ता ,प्रशासक व अन्य व्यक्ति इस अध्ययन से लाभांवित हो सके। इस संदर्भ में प्रस्तुत शोधकार्य के महत्वपूर्ण उद्देश्य निम्नलिखित है –

1. जनसंख्या वृद्धि संरचना आदि कारको के स्थानिक संरचना का अध्ययन करना।
2. जनसंख्या में वृद्धि स्थापित करने वाले कारको की पहचान करना।
3. अध्ययन क्षेत्र मे जनसंख्या वृद्धि एंव नगरीयकरण प्रारूप का कालिक व स्थानिक दृष्टि से मूल्यांकन करना।
4. जनसंख्या वृद्धि के आर्थिक विकास पर हानिकारक प्रभावों अध्ययन करना।

४ शोध परिकल्पनाएँ :

परिकल्पना किसी भी शोध के बारे में बनने वाली ऐसी प्रस्थापना होती है, जिसकी सत्यता को सिद्ध करने के लिए शोधकर्ता एक सटीक विधि तंत्र द्वारा उसका परीक्षण करता है। इस प्रकार यह शोधकर्ता के मस्तिष्क में उत्पन्न एक प्रकार के अनुमान होते है जो यह निरूपित करते है कि विभिन्न घटक किस प्रकार अर्न्तसंबन्धित है। प्रस्तुत अध्ययन क्षेत्र के बारे

में शोधकर्ता के मस्तिष्क में विगत दशकों में जनसंख्या वृद्धि एवं नगरीयकरण प्रतिरूप के कारण उत्पन्न परिदृश्य परिकल्पना के रूप में उभरे है।

शोध अध्ययन में निम्नलिखित परिकल्पनाओं को जांच करने का प्रयास किया गया है–

1. क्षेत्र की जनसंख्या की प्राकृतिक परिर्वतन–दर में क्षेत्रीय विषमताएँ बनी हुई है।
2. दिन–प्रतिदिन जनसंख्या वृद्धि हो रही है तथा नगरीकरण में बढावा देखने को मिलता है।
3. जनसंख्या के तेजी से विकास के आर्थिक विकास पर हानिकारक प्रभाव पड़े है।

५ शोध विधितंत्र एंव ऑकड़ो के स्त्रोत :

प्रस्तुत लधु शोध में सीकर जिले संदर्भ में विभिन्न प्रकार के ऑकड़ो का संकलन किया गया है। शोध प्रक्रिया के अन्तर्गत ऑकड़ो का एकीकरण द्वितीयक स्रोतो से किया गया है। द्वितीयक स्तर के ऑकडो का संकलन मुख्यत : भारतीय जनगणना विभाग, आर्थिक एंव सांख्यिकीय निदेशालय द्वारा प्रकाशित सांख्यिकी डाटा तथा राज्य स्तरीय, जिला स्तरीय, तहसील स्तरीय, सरकारी व गैर सरकारी संस्थाओं द्वारा प्रकाशित व अप्रकाशित विभागों से किया गया है। आकड़ो के एकत्रीकरण पश्चात सम्बन्धित जानकारी को क्रमबद्ध रूप मे जनसंख्या सम्बन्धी समस्याओ के निदान हेतु उपयुक्त सुझाव प्रस्तुत किये गये है।

६ जनसंख्या वितरण व जनसंख्या घनत्व :

जिस प्रकार राजस्थान के विभिन्न क्षेत्रों में जनसंख्या वितरण व घनत्व अलग –अलग है उसी प्रकार सीकर जिले का जनसंख्या घनत्व भी असमान है। क्यों कि जहाँ श्रीमाधोपुर तहसील सर्वाधिक जनसंख्या वाला क्षेत्र है। वही फतेहपुर तहसील सबसे कम जनसंख्या वाला क्षेत्र है। जनसंख्या के असमान वितरण को कई कारक प्रभावित करते है। जिनमें जिले के उच्चावच, वर्षा, परिवहन, रोजगार आदि प्रमुख कारक है। श्रीमाधोपुर तहसील में जिले की अधिकतम जनसंख्या का कारण वहॉ की समतल उपजाऊ कृषि योग्य भूमि तथा जल की पर्याप्त आपूति है जो यहाँ के लोगों को पर्याप्त रोजगार देने में सहायक है। लेकिन जिस प्रकार उपजाऊ मिट्टी जनसंख्या वितरण की असमानता को प्रभावित करती है उसी प्रकार क्षेत्र की जलवायु में असमानता के कारण जनसंख्या घनत्व में असमानता पायी जाती है।

सीकर जिला जनसंख्या घनत्व (व्यक्ति प्रतिवर्ग किमी)

वर्ष	जनसंख्या घनत्व
1951	87
1961	106
1971	134
1981	178
1991	238
2001	296
2011	346

स्त्रोतः–जिला जनगणना प्रतिवेदन (1951–2011)सीकर

आरेख–सीकर जिला जनसंख्या घनत्व (व्यक्ति प्रतिवर्ग किमी)

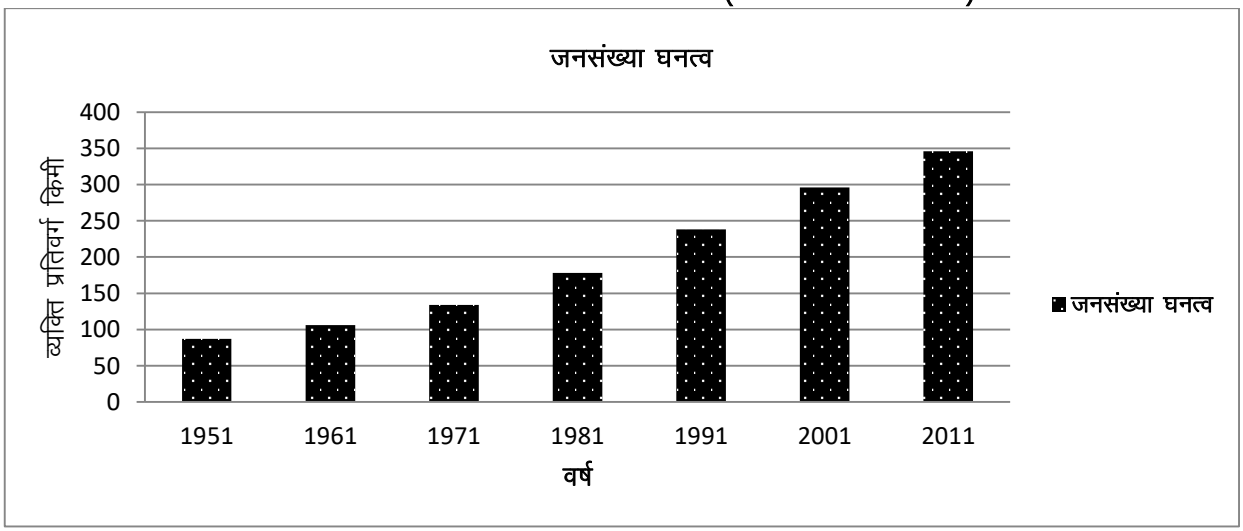

सीकर जिला जनसंख्या वितरण (1951–2011)

वर्ष	पुरुष	महिला	योग
1951	342885	333434	676318
1961	417163	402523	820286
1971	531650	510998	1042648
1981	701778	675467	1377245
1991	947232	895682	1842914
2001	1172753	1115035	2287788
2011	1377120	1300617	2677737

स्त्रोतः–जिला जनगणना प्रतिवेदन (1951–2011) सीकर

आरेख–सीकर जिला जनसंख्या वितरण (1951–2011)

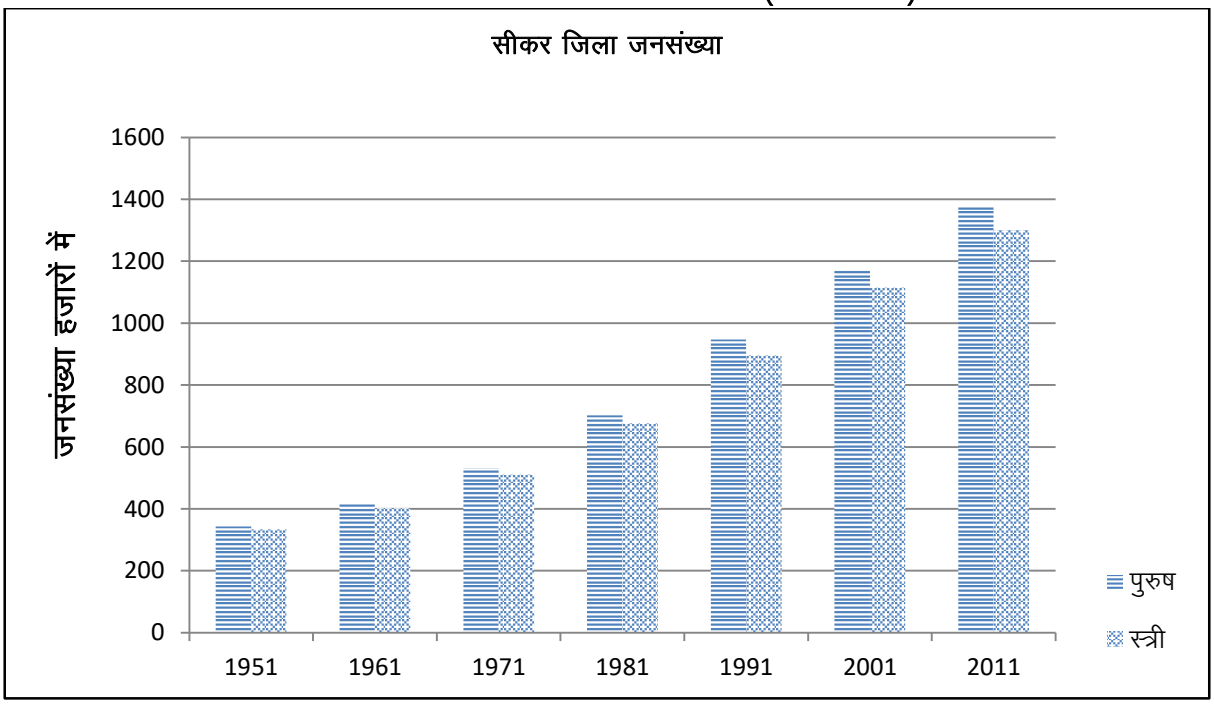

सीकर जिला तहसील अनुसार जनसंख्या वितरण (2001–2011)

वर्ष	2001			2011		
तहसील	पुरुष	महिला	योग	पुरुष	महिला	योग
फतेहपुर	131833	129238	261071	154639	150999	305638
लक्ष्मणगढ	144808	138881	283689	162159	158797	320956
सीकर	2732779	257592	530871	331417	312769	644186
दातारामगढ	188225	176356	358581	215990	207324	423314
श्रीमाधोपुर	260134	246845	506979	301263	282065	583328
नीमकाथाना	180474	166123	346597	209522	190389	399911

स्त्रोतः–जिला जनगणना प्रतिवेदन (2001–2011) सीकर

७ सीकर जिला जनसंख्या वृद्धि :

जनसंख्या वृद्धि की समस्या से सीकर जिला भी अछूता नहीं है पिछले दशकों में जिले की जनसंख्या में तीव्र वृद्धि दर्ज की गई। 1951 में जिले की कुल जनसंख्या 6.76 लाख थी जो 1961 में 8.20 लाख (21.29 प्रतिशत) 1971 में 10.42 लाख (27.11 प्रतिशत) 1981 में 13.77 लाख (32.09 प्रतिशत) 1991 में 18.42 लाख (33.81 प्रतिशत) 2001 में 22.87 लाख (24.14 प्रतिशत) तथा 2011 में यह 17.04 प्रतिशत वृद्धि के साथ 26.77 लाख हो गई है। इस दशक में जनसंख्या में कमी परिवार नियोजन कार्यक्रम, शिक्षा का प्रसार एवं जागरुकता के कारण हुई है।

Shikshan Sanshodhan : Journal of Arts, Humanities and Social Sciences ISSN: 2581-6241 Volume - 3, Issue - 2, Mar-Apr – 2020
Bi-Monthly, Peer-Reviewed, Refereed, Indexed Journal Impact Factor: 3.589
Received on : 05/04/2020 Accepted on : 19/04/2020 Publication Date: 30/04/2020

सीकर जिला दशकीय जनसंख्या वृद्वि

वर्ष	पुरुष	महिला	योग	प्रतिशत वृद्वि	घनत्व	लिंगानुपात
1951	342885	333434	676318	—	—	—
1961	417163	402523	820286	21.29	106	963
1971	531650	510998	1042648	27.11	134	961
1981	701778	675467	1377245	32.09	178	962
1991	947232	895682	1842914	33.81	238	946
2001	1172753	1115035	2287788	24.14	296	951
2011	1377120	1300617	2677737	17.04	346	944

स्त्रोतः–जिला जनगणना प्रतिवेदन (1951–2011)सीकर

आरेख–सीकर जिला दशकीय जनसंख्या वृद्वि

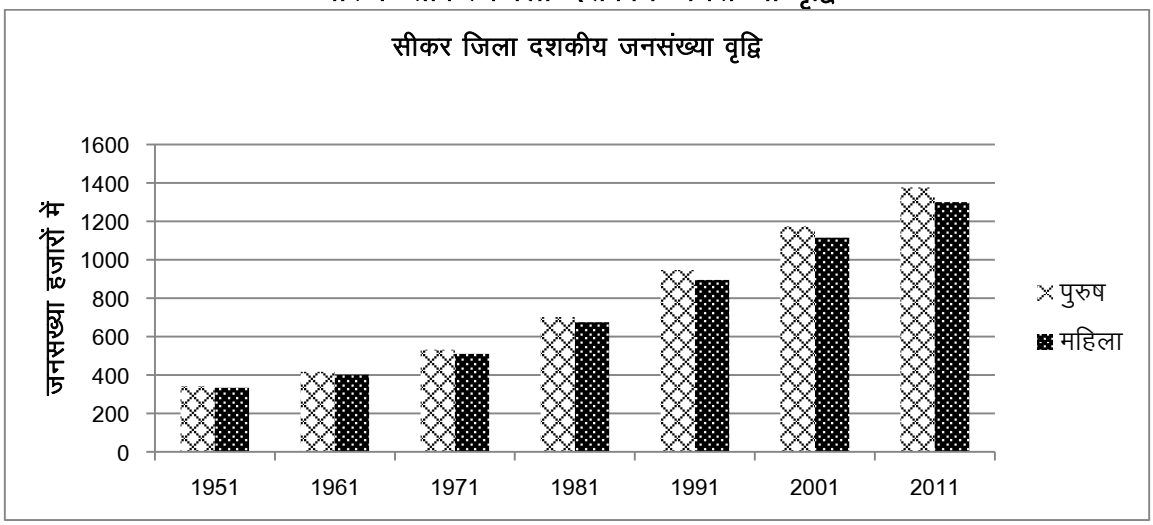

८ निष्कर्ष एवं सुझाव :

जिले में जनसंख्या की तीव्र वृद्वि से कई प्रकार की कठिनाईया दिन प्रतिदिन सामने आ रही है जनसंख्या में तीव्र वृद्वि से राज्य विकास, आर्थिक प्रगति, भौगोलिक संसाधनों के समूचित एवं सन्तुलित उपभोग आदि पर प्रतिकूल प्रभाव पडता है। जिले में जनसंख्या वृद्वि से आवास, पानी, रोजगार संसाधनों के संरक्षण आदि की समस्याऐ उभरकर आती है इन्ही से जुडी हुई शिक्षा, प्रोद्योगिकी, स्वास्थ्य, परिवहन स्वच्छता आदि की समस्याऐ भी जुडी हुई है।

अध्ययन क्षेत्र में जनसंख्या वृद्वि की समस्याए निम्न है–

अध्ययन क्षेत्र में जनसंख्या वृद्वि से संबन्धित अनेक समस्याए है जिसके कारण जिले में विकास धीमी गति से हो रहा है यहा जनसंख्या की प्रमुख समस्याऐ निम्नलिखित –

उच्च नगरीयकरण :– अध्ययन क्षेत्र में रोजगार की खोज तथा नगरीय सुविधाओं के आकर्षन से ग्रामीण निवासी नगरो में आकर बस गये है। नगरो में जनसंख्या के भार के बढने से मुलभूत सुविधाओं की उपलब्धता बाधित होने लगती है।

बेरोजगारी :– ग्रामीण क्षेत्रो से युवा वर्ग शिक्षार्जन के लिए शहरो की ओर आता है तथा शहरी क्षेत्र से ही रोजगार की अपेक्षा रखता है। अधिक जनसंख्या के कारण वह रोजगार के अवसर सिमित होने के कारण बेरोजगारी की समस्या बढती जा रही है।

कुपोषण :– अध्ययन क्षेत्र में निम्न जीवन स्तर के कारण संतुलित आहार का नितानंत आभाव पाया जाता है इससे बच्चे कुपोषण का शिकार हो जाते है तथा उनमें रोग प्रतिरोधक क्षमता का विकास नहीं हो पाता है।

खाद्य समस्या :– अधिक जनसंख्या की उदर पूर्ति के लिए प्रति वर्ष खाद्यान्नों तथा अन्य खाद्यय पदार्थों की मांग बढती जा रही है। कृषी उदपादन की कमी क्यो कि कृषि वर्षा पर आश्रित है। और भू जोत का आकार भी छोटा है के कारण आर्थिक ढाचे पर विपरीत प्रभाव पडता है तथा निर्धनता बढती है।

स्वास्थ्य संबधी समस्याए :– जिले में खाद्य समस्या तथा कुपोषण के कारण जनस्वास्थ्य दशाऐ असंतोषप्रद पायी जाती है। जनता अज्ञानता, स्वस्थ्य संबधी कार्यक्रमों की असफलता, अस्वच्छता के कारण कई प्रकार के रोगो से ग्रसित रहती है।

आवास की समस्या :– आवास की समस्या जनसंख्या वुद्वि के साथ भयानक होती जा रही है। शहरों के पास की परिधि में उत्तम उर्वरक कृषि भूमि को मकान बनाने के काम में लिया जाने लगा है। गांवो में भी सयुक्त परिवार प्रथा के विश्रृंखलित होने के साथ साथ ही आवास की समस्या पैदा हो गई है।

९ जनसंख्या समस्या हेतु सुझाव :

जनसंख्या समस्या का समाधान मात्र परियोनाओं के निर्माण एवं प्रशासनिक जुमले के आधार पर संमवनहीं है। इसे जन चेतना, जन भागीदारी एवंज न समूह का आन्दोलन बनाने पर ही समस्या का समाधान सम्भव है। अध्ययन क्षेत्र में जनसंख्या समस्या हेतु निम्न सुझझव कारगर सिद्व हो सकते है –

- तीव्र आर्थिक विकास जनसंख्या वृद्वि रोकने का एक प्रभावशाली हथियार है शिक्षा प्रसार, उद्योगो का विकास, जनचेतना, गरीबीउन्मूलन, बेरोजगारी उनमूलन आदि ऐसे कारण है जिनमें सुधार होने से स्वयं ही जनसंख्या वृद्धि में रोक लग जाती है। जिनता का स्तर उपर उठ जाता है तथा जनमानस अधिक जनसंख्या के प्रभावों को समझ सकती है।
- आर्थिक विकास दर बढते ही जनता का स्तर बढेगा एवं अपने आप ही लोग जनसंख्या सीमित रखने के बारे में कारगर कदम उठा लेगें।
- जिले में खाद्य समस्या है। बढती जनसंख्या के लिए खाद्यानों का उत्पादनप बढना अत्यावश्यक है। इसके लिए अधिक भूमि को कृषि के अन्तर्गत लाना, वैज्ञानिक विधियों का उपयोग कर गहन कृषि को महत्व देना अधिक पैदावार देने वाले बीज काम में लेना सिचाई सुविधाओं का विस्तार करता रासायनिक उर्वरक एव ंके कीटनाशको का समुचित उपयोग करना आदि उपया किये जाने चाहिए।
- औद्योगीकरण से निर्धनता दूर होती है, रोजगार उपलब्ध होता है तथा औद्योगिक विकास से परिवहन संचार एवं व्यापारिक उन्नति के द्वार भी खुलते है।
- मानव संसाधन को उपलब्ध प्राकृतिक संसाधनों के क्षेत्रों से जाडने के लिए तथा कृषि औद्योगिक विकास की गति बढाने के लिए परिवहन सुविधओं का विकास किया जाना चाहिए ।
- शिक्षा के प्रसार तथा जन जाकृति के कार्यक्रमों द्वारा समाज में परिवार के सीमित आकार के गुणो का प्रचार किया जाना चाहिए ।
- जनसंख्या की विशातला की समस्या की भयावहता तथा सम्भावी दुष्परिणामों के प्रति आमजन को जागरूक किया जाना आवश्यक है।
- परिवार नियोजन की नवीन विधियों तथा महत्व को को जनमानस तक प्रभावी तरीके के संप्रेषित किया जाना चाहिए सामाजिक चेतना द्वारा संतति निग्रह के उपायों को वांछित सफलता मिल सकेगी ।
- जब तक 14–16 वर्ष लडकियॉ कम उम्र में मॉ बनकर लगातार जन्म दर एवं प्रजनन अवधि में विस्तार करती रहेगी तब तक जनसंख्या वृद्वि नहीं रोकी जा सकती । अतः बाल विवाह प्रथा को समूल नष्ट करना होगा आज भी अक्षया तृतीय, पीपल पूर्णिमा आदि अबूझ सावों पर बहुत अधिक मात्रा में बाल विवाह होते है।

१० अध्ययन का महत्व :

वर्तमान में जनसंख्या की तीव्र वृद्धि के कारण विश्व के सामने अनेक विकट समस्याऐं उत्पन्न हो गई है। मानव ने अपनी बढती संख्या की असीमित आवश्यकताओं की पूर्ति का दबाव विभिन्न प्रकृति प्रदत्त पदार्थों पर प्रेषित कर अनेक सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक तथा पर्यावरणीय समस्याओं कों जन्म दिया है। समय के साथ बढती जनसंख्या सम्बन्धी समस्याऐ जटिल व भयावह होती जा रही हैं। जिससे निरन्तर जीविकोपार्जन साधन उपलब्ध करा पाना एक चुनौतीपूर्ण कार्य हो गया है। नगरों मे जनसंख्या वृद्धि दर ग्रामीण क्षेत्रो की अपेक्षा कम होती है। विश्व के विकसित राष्ट्रो में अधिक नगरीकरण तथा कम जनसंख्या वृद्धि दर देखने को मिलती है, अतः नगरीकरण की प्रवृति को बढावा दिया जाना चाहिए। प्रस्तुत अध्ययन की मुख्य उपयोगिता यह होगी की जिले की विकास योजनाओं में संलग्न व्यक्तियों व संस्थाओ को जिले में वर्तमान विकास का स्तर ज्ञात होगा जिससे कि जिले के भावी विकास हेतु उपयुक्त योजना का निर्धारण कर सकें। जनसंख्या की विशालता की समस्या की भयावहता तथा सम्भावी दुष्परिणामों के प्रति आमजन को जागरूक किया जा सके और संसाधनो का समुचित उपयोग करते हुये लोक कल्याण की ओर अग्रसर हो सके।

लधुशोध प्रबंन्ध में प्रस्तुत अध्ययन के आधार पर जिले के विकास में शोधकर्ता, सामाजिक कार्यकर्ता नगरीकरण से सम्बन्धित विभिन्न समस्याओं पर लाभप्रद कदम उठा सकें। जनसंख्या अध्ययन का महत्व अल्पकालिक एवम् दीर्घकालिक योजनाओं, सरकारी नीतियों, पर्यावरण संरक्षण उपायों के आदि के लिए विशेष रूप से है।

सन्दर्भ सूची :

१ चान्दना आर.सी.(2014) : 'जनसंख्या भूगोल' कल्याणी पब्लिकेशन, नई दिल्ली।
२ भल्ला एल.आर.(2010) : 'राजस्थान का भूगोल'कुलदीप पब्लिशिंग हाउस, जयपुर।
३ गुहा एल. एल.(2001) : 'राजस्थान का भूगोल एवं अर्थव्यवस्था, कॉलेज बुक हाउस प्राइवेट लि जयपुर।
४ लाल एच.(1986) : ''जनसंख्या भूगोल '' वसुन्धरा प्रकाशन गोरखपुर।
५ शर्मा एच.एस. और एम. एल.(2010) : 'राजस्थान का भूगोल', पंचशील प्रकाशन जयपुर।
६ बंसल सुरेश चन्द्र (2008) : नगरीय भूगोल, मिनाक्षी प्रकाशन मेरठ

प्रतिवेदन

१ राजस्थान सरकार : स्टेटिकल आर्थिक एवं सांख्यिकी जयपुर
२ राजस्थान सरकार : जनगणना विभाग
३ राजस्थान सरकार : सेन्सस एण्ड मूक जनगणना विभाग जयपुर।
४ भारत सरकार : सेन्सस एण्ड मूक जनगणना विभाग नई दिल्ली।
५ भारत सरकार : जनगणना विभाग नई दिल्ली।

पत्र पत्रिकाएं

१ राजस्थान सरकार : जिला सांख्यिकी रुपरेखा सीकर ।
२ राजस्थान सरकार : जिला दर्शन; जिला सूचना एवं जनसम्पर्क कार्यालय शासन सचिवालय जयपुर।
३ राजस्थान सरकार : जिला सूचना एवं जनसम्पर्क कार्यालय सीकर।
४ राजस्थान सुजस : कार्यालय जिला सूचना एवं जनसम्पर्क जयपुर ।
५ भारत सरकार : भूगोल और आप द्विमासिक पत्रिका।
६ योजना : नई दिल्ली।